

ISSN : 2249-2844 ANUSEELAN

अनुशीलन

नवजागरणकालीन कथा-साहित्य

वर्ष-48, अंक-36

प्रधान संपादक

प्रो. (डॉ.) के. वनजा

संपादक

डॉ. के. के. गिरीश कुमार



हिन्दी विभाग

कोच्ची विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

कोच्च-682 022

जनवरी-2017

परामर्श मंडल

डॉ. रविभूषण, से. नि. आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय
डॉ. शम्भूनाथ, से. नि. आचार्य, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
डॉ. रामबक्ष, आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

प्रो. (डॉ.) के. वनजा
प्रो. (डॉ.) आर. शशिधरन
प्रो. (डॉ.) एन. मोहनन
प्रो. (डॉ.) के. अजिता
डॉ. के.के. गिरीश कुमार
डॉ. के. एन. अनीश
श्री राजकुमार मीणा

मूल्य : 100.00 रुपये (एक सौ रुपये मात्र)

HINDI • ANUSEELAN—RESEARCH JOURNAL • NAVAJAGARANKALEEN KATHA-
SAHITYA • EDITOR—DR. K. K. GIRISH KUMAR • PUBLISHED BY DEPARTMENT OF
HINDI, CUSAT, KOCHI-682 022 • PRINTED AND PUBLISHED BY ANUUGYA BOOKS,
SHAHDARA, DELHI-110032, Mob. 09350809192, E-mail: anuugyabooks@gmail.com

अनुक्रम

1. नवजागरण, स्त्री-प्रश्न और आचरण-पुस्तकें गरिमा श्रीवास्तव	7
2. हिन्दी नवजागरण और आरम्भिक दौर के उपन्यास डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय	32
3. नवजागरणकालीन गद्य साहित्य : एक पुनर्विचार राजीव रंजन गिरि	42
4. नवजागरणकालीन हिन्दी उपन्यास—देवकीनन्दन खत्री का विशेष सन्दर्भ डॉ. सी. जय शंकर बाबु	55
5. वाम शिक्षा बनाम 'वामा शिक्षक' डॉ. के. के. गिरीश कुमार	67
6. परीक्षा गुरु में नवजागरण की अनुगूँज डॉ. मेरली के. पुनूस्	73
7. देवरानी जेठानी की कहानी—नवजागरण का अग्रदूत डॉ. लैजा पी जे	76
8. नवजागरण की चेतना और 'हरिऔध' के उपन्यास डॉ. विजी वी.	79
9. नवजागरणकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री बीना पैली	84
10. समाज को भाग्य में बदलती 'भाग्यवती' डॉ. जी सुजिदा	90
11. नवजागरणकालीन हिन्दी उपन्यास : एक विश्लेषण मेरी जीना के. जी.	96
12. नवजागरणकालीन उपन्यास 'देवरानी-जेठानी की कहानी' में स्त्री जागरण हेलन मेरी ए. जे	100
13. सेवासदन : नवजागरण कालीन स्त्री-चेतना का प्रखर स्वर अंजु के. आर.	104
14. नवजागरणकालीन हिन्दी कहानी प्रो. आई. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी	108
15. हिन्दी की आदिकालीन कहानियों में नवजागरण डॉ. वी. के. सुब्रमण्यम	117

हिन्दी की आदिकालीन कहानियों में नवजागरण

डॉ. वी. के. सुब्रमण्यम

नवजागरण का सरल व सीधा अर्थ है— प्रकाश की ओर आँखें खुलना, मनुष्य को अज्ञान की गहरी नींद से उठाना और जीवन को देखने का ढंग बदलना। इसका शाब्दिक अर्थ है— पुर्नजन्म।

नवजागरण की प्रवृत्ति हमेशा रही है। घुमक्कड़ प्रवृत्ति को छोड़कर कहीं स्थिर रहने के लिए मनुष्य के द्वारा प्रकृति को अपने जीवन के अनुकूल बना देना, कबीलों को बनाना, समाज बनाकर व्यवस्थित हो जाना आदि नवजागरण का आरम्भ था। बाद में मनुष्य समुदाय की जीवन-यात्रा में अनेकानेक तरह-तरह के परिवर्तन नवजागरण के कारण साध्य हुए। आधुनिक काल में आकर नवजागरण तेजी से चलता दिखाई पड़ता है।

लोगों में स्वतन्त्रता-बोध नवजागरण के कारण पैदा हुआ। यह बोध ही जनतन्त्र की ओर की यात्रा तय करने का पहला कदम था। आधुनिकता के आगमन से पूर्व, मनुष्य के ऊपर अप्राकृतिक, असुन्दर, कुरूप व अन्धकारमय व्यवस्था चलायी जा रही थी, इसमें क्रूर सामन्तवादी-जमींदारी शैतान अपना राज कर रहा था। यह व्यवस्था अपना राक्षसीय चेहरा लोगों को दिखा रही थी। धर्म और जाति, शास्त्र और संस्कृति के पोशाक में ये ताड़कीय शक्ति बैठी थी। इन्होंने साधारण मनुष्य को ऐसे जीवन बिताने के लिए बाध्य किया था कि जिसमें आजादी की किरणें कभी नहीं फूट सकी थीं।

वास्तव में नवजागरण मनुष्य के मन के समस्त संकुचित चिन्तनों को विदा कर देने का काम शुरू करता है और जातिवाद, साम्प्रदायिकता,

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
कालिकट विश्वविद्यालय